7 जून, 2010 को 1900 बजे चेक गणराज्य की संसद की सीनेट के प्रेजीडेंट महामहिम श्री प्रेमसिल सोबोत्का द्वारा आयोजित भोज में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी द्वारा दिया गया शुभकामना-भाषण

सबसे पहले मैं आपके हार्दिक स्वागत उद्‌गार एवं भरपूर आतिथ्य के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

यहां खड़े होकर मुझे उन संबंधों का स्मरण हो रहा है जिनसे हमारे दोनों देश जुड़े हुए हैं। ये संबंध सिर्फ लोकतांत्रिक और संसदीय शासन के मूल्यों एवं सिद्धांतों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता पर ही आधारित नहीं हैं बल्कि ये संबंध हमारी सभ्यतागत विरासत, भाषायी जुड़ाव और विद्वानों के बीच सम्पर्क पर भी आधारित हैं। हमारे महान कवि रबिन्द्रनाथ टैगोर ने चेक गणराज्य के जाने-माने इंडोलॉजिस्ट और अपने मित्र प्रोफेसर लेस्नी, जिन्होंने उनकी कविताओं और उपन्यासों का अनुवाद किया, के आमंत्रण पर वर्ष 1921 में और पुन: 1926 में प्राग की यात्रा की। जवाहर लाल नेहरू ने वर्ष 1938 में अपनी पुत्री इंदिरा के साथ प्राग की यात्रा की। स्वतंत्रता से बहुत पहले हमने दोनों देशों के लोगों के बीच मैत्री को बढ़ावा देने के लिए अपने देशों में संस्थाओं की स्थपना कर ली थी।

हमारे प्रतिनधिमंडल में विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय संसद के सदस्य शामिल हैं। हमारी संसदों के बीच आदान-प्रदान से हमारे देशों के बीच बढ़ते बहुमुखी संबंधों को बल मिलता है। दिसम्बर, 2007 में महामहिम की भारत यात्रा हमारे सहयोग को सुदृढ़ करने का माध्यम बनी।

भारत में हमारे सामने संसदीय लोकतंत्र की संरचना के भीतर तीव्र एवं सर्व समावेशी आर्थिक विकास प्राप्त करने एवं इसे कायम रखने की चुनौती है। विगत दो वर्षों में अर्थव्यवस्था के हमारे प्रबंधन से अप्रत्याशित वैश्विक वित्तीय संकट का हमारे विकास की गति पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में हमें सहायता मिली है। वर्ष 2009-10 में आर्थिक विकास की दर बढ़कर 7.4 प्रतिशत हो गई और चालू वित्तीय वर्ष अर्थात् 2010-11 में अर्थव्यवस्था में 8.5 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है। यह हमारी अर्थव्यवस्था के मजबूत आधार को परिलक्षित करता है।

हमारा मानना है कि भारत के बढ़ते बाजार और चेक प्रौद्योगिकी के बीच आदर्श सामंजस्य है। सॉफ्टवेयर, औषधि उत्पाद, अवरसंरचना, वस्त्र उत्पाद एवं इंजीनियरिंग के सामान जैसे विविध क्षेत्रों में द्विपक्षीय व्यापार और निवेश पहले से विद्यमान है। हमारे दोनों देशों के औद्योगिक प्रयोक्ताओं तथा आर. एण्ड डी. संगठनों के बीच गत माह नई दिल्ली में सम्पन्न बैठक में परस्पर लाभकारी सहयोग के क्षेत्रों को और विस्तृत करने पर विचार किया गया।

आज की चुनौतियां किसी देश विशेष तक सीमित नहीं हैं। हाल में भारत एवं अन्य देशों में घटी आतंकवादी घटनाएं इस बात का अशुभ संकेत हैं कि आतंकवाद की महाविपत्ति हर प्रकार के सभ्य जीवन के लिए बाधक है। इसकी कोई सीमा नहीं है और यह अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। हमें हर तरह के आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ करने हेतु अपने सामूहिक प्रयासों को अवश्य जारी रखना चाहिए और इन प्रयासों में नई जान डालनी चाहिए। आतंकवादियों के सुरक्षित ठिकानों को खत्म करने के लिए त्वरित एवं विश्वसनीय कदम उठाए जाने चाहिए। आतंकवाद के विरूद्ध वैश्विक

मतैक्य तथा ऐसी विधिक प्रणाली को सुदृढ़ करने की तत्काल आवश्यक है जिसमें लंबे समय से संयुक्त राष्ट्र में विलंबित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद संबंधी व्यापक अभिसमय को शीघ्र अंगीकृत किया जाना शामिल है।

हमारे पासे हमारे दोनों देशों के बीच सहयोग को और सशक्त करने के अवसर उपलब्ध हैं। आर्थिक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा और द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण के संबंध में आज जिन करारों पर हस्ताक्षर किये गए हैं, उनसे हमारे द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने के और भी अवसर प्राप्त होंगे। हम व्यापक भारत-यूरोपीय संघ कार्यनीतिक साझेदारी के संदर्भ में भी साथ मिलकर कार्य रहे हैं।

महामहिम, देवियो और सज्जनो,

आइए, हम सब मिलकर

⇒ महामहिम सीनेट प्रेजीडेंट डा. प्रेमसिल सोबोत्का और मैडम रेडमिला सोबोत्का के अच्छे स्वास्थ्य एवं उनकी सफलता;

⇒ हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियों के बीच निकट सहयोग तथा हमारी दोनों सरकारों के बीच बढ़े हुए व्यवसाय; और

⇒ दोनो देशों और उनके लोगों के बीच घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंधों की कामना करें।